

उलंग राजा / नीरेंद्र नाथ चक्रवर्ती

(बंगाल के महशूर कवि नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती नहीं रहे, उनकी एक कविता)

सब कोई देख रहा है कि राजा नंगा है, फिरभी,
लोग तालियां बजा रहे हैं।
सबकोई चिल्ला चिल्ला के बोल रहे हैं, साबास साबास!
कोई संस्कार वश, कोई डर से,
कोई अपना बुद्धि दूसरे को गिरवी में दे दिए,
या तो कोई रोजी रोटी के लिए निर्भरशील, या कोई
कृपाप्रार्थी, उम्मीदवार, प्रवंचक,
कोई सोच रहे हैं, सच में राजवस्त्र कितनी महीन है,
नजर में
नहीं दीखता तथापि, होगा तो जरूर,
कम से कम होना असंभव तो नहीं!

कहानी सबको पता है।
परन्तु उस कहानी में,
सिर्फ तारीफ करनेवाले कुछ
आपादमस्तक डरपोक, चालबाज या निर्बोध
चाटुकार नहीं थे।
एक शिशु भी था।
सत्यवादी, सरल, साहसी एक शिशु।

उतर के आया कहानी का राजा वास्तव की आम
सड़क पर।
फिर से तालियां बज रही हैं फटाफट,
भीड़ बढ़ रही है चाटुकारों की।
परन्तु उस शिशु को हम
आज इस भीड़ में कहीं देख नहीं रहे हैं।

कहाँ गया वह बच्चा? क्या कहीं कोई उसे किसी
पर्वत की गुप्त गुफा में
छुपा के रख दिया?
या वह पत्थर-घास-मिट्टी लेकर खेलते खेलते
सो गया
कोई दूर
वीरान नदी के किनारे या कोई समतल की एक
वृक्षछाया में?
जाओ, जैसे भी हो उसे
खोज निकालो।
उसे एक बार लाकर इस उलंग राजा के सामने
खड़ा तो करो।
उसे एकबार ये तालियों के ऊपर अपनी आवाज
उठाकर
सवाल तो पूछने दो -
हे राजा, तेरा कपड़ा कहाँ?

करोड़पति माँ को नसीब नहीं अर्थी

बीते रविवार को अमेरिका में बसे
इंजीनियर ऋतुराज साहनी लंबे अरसे
बाद अपने घर मुंबई लौटे तो घर पर
उनका सामना अपनी माँ के कंकाल
से हुआ। बेटे को नहीं मालूम कि उसकी
माँ आशा साहनी की मौत कब और
किन परिस्थितियों में हुई। आशा साहनी
के बुढ़ापे की आशा उनके इकलौते
बेटे ने खुद स्वीकार किया कि उसकी
माँ से आखिरी बातचीत कोई सवा
साल पहले हुई थी। 23 अप्रैल, 2016
को माँ ने कहा था कि बेटा अब अकेले
नहीं रह पाती हूँ। या तो अपने पास
अमेरिका बुला लो या फिर मुझे किसी
ओल्डएज होम में भेज दो। बेटे ने बड़बुद
दिया कि वह जल्द ही इंडिया आएगा।
वह सवा साल बाद माँ से किया वादा
पूरा करने इंडिया आया, पर माँ के
हिसाब से देर हो गई। इसी बीच न जाने
कब आशा साहनी की मौत हो गई।

रविवार को ऋतुराज किसी तरह घर
के भीतर घुसे तो उन्हें अपनी 63 साल
की माँ आशा साहनी का कंकाल मिला।
आशा साहनी 10वें फ्लोर पर अकेले
रहती थीं। उनके पति की मौत 2013 में
हो चुकी थी। पुलिस के मुताबिक 10वीं
मंजिल पर स्थित दोनों फ्लैट साहनी
परिवार के ही हैं।
बेटे ने अंतिम बार अप्रैल 2016 में
बात होने की जानकारी ऐसे दी मानो
वह अपनी माँ से कितना रेगुलर टच में
था। जैसा कि बेटे से बातचीत में आशा
ने संकेत भी किया था कि वह इतनी
अशक्त हो चुकी थीं कि उनका अकेले
चल फिर पाना और रहना मुश्किल हो
गया था। करोड़ों कमाने वाले बेटे की
माँ और छह करोड़ के फ्लैट की
मालकिन आशा साहनी को अंतिम
यात्रा नसीब नहीं ही हुई।
प्रत्यक्षदर्शियों का यह अनुमान है कि

संभवतः आशा की मौत भूख-प्यास
के चलते हुई। मुंबई के अंधेरी इलाके
लोखंडवाला की पाश सोसायटी में
इस अकेली बुजुर्ग महिला की मौत
जिन हालात में हुई, उससे यह साफ है
कि एक अमेरिकी विश्वविद्यालय की
रिपोर्ट में छुपी पश्चिमी सभ्यता की
त्रासदी हम भारतीयों के दरवाजे पर
दस्तक देती लग रही है। इस रिपोर्ट के
मुताबिक मौत का इंतजार ही इस सदी
की सबसे बड़ी बीमारी और जीवनशैली
की सबसे बड़ी त्रासदी है। अशक्त माँ
की करुण पुकार सुनकर भी अनसुना
कर देने वाला जब अपना इकलौता
बेटा ही हो, तो ऐसे समाज में रिश्ते-
नातेदारों से क्या अपेक्षा। आशा साहनी
की मौत ने फिर चेताया है कि भारत
के शहरों में भी सामाजिक ताना-बाना
किस कदर बिखर गया है।
- पवन कुमार झा

यह सप्ताह / निर्णय



कोलंबा कालीधर

भी विषय के बारे में जानकारी या रिसर्च
आपको एक तय सीमा तक मदद करती
है लेकिन उसके बाद आपको स्पष्ट बनाने
के बजाय दुविधा में भी डालती है। कोई
भी अच्छा निर्णय जितना अच्छी
जानकारियों के आधार पर लिया जाता है
उसमें अपनी जरूरतों और अपनी अनुमान
की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है।

निर्णय की समयसीमा तय करें

किसी भी निर्णय के लिए समयसीमा
तय करना बहुत जरूरी है। यह संभव है कि
आपको ज्यादा जानकारी की जरूरत हो
या आप कम तनाव वाले समय की प्रतीक्षा
कर रहे हों लेकिन इतनी ज्यादा देर प्रतीक्षा
करना ठीक नहीं कि आपके निर्णय किसी
और द्वारा लिए जाने लेंगे। लोग कहे कि
आपने निर्णय ही नहीं लिया इसलिए जैसा
भी मैं ठीक समझता था मैंने वैसा कर दिया।
समय पर निर्णय न कर पाने की वजह से

आप अपने ऊपर दबाव बढ़ा लेते हैं और
फिर अचानक आवेश में आकर कोई भी
निर्णय लेने पर आमादा हो जाते हैं। ऐसे में
सही निर्णय से ज्यादा निर्णय लेना महत्वपूर्ण
हो जाता है।

अपने मन पर भरोसा करें

कई बार आपको अनुमान होता है कि
फलां चीज आपको लिए सही है या नहीं।
आपके इस अनुमान के पीछे आपका
अनुभव और आपकी सोच होती है। अगर
आपका अनुमान आपको किसी विशेष
निर्णय पर पहुंचने के लिए कह रहा है तो
उसकी अनदेखी ना करें। लेकिन अनुमान
और आवेग में अंतर जरूरी है। जब आप
अचानक जरूरत महसूस करते हुए किसी
निर्णय पर पहुंचने की हड़बडी में रहते हैं
तो वह आवेगपूर्ण अवस्था है और उसमें
बहुत संभव है कि आपको आगे चलकर
अपने निर्णयों पर पछतावा हो। अनुमान
या दिल के कहे पर निर्णय ले आवेगपूर्ण
अवस्था में नहीं।

खराब नतीजों से परेशान न रहें

जीवन में यह हमेशा ही होता है कि
कुछ निर्णय हमारे पक्ष में रहते हैं तो कुछ
विरोध में भी जाते हैं। अपने खराब निर्णयों
को लेकर खुद को दोष देने से हम आगे
के अच्छे निर्णय नहीं ले पाते हैं। अपने
पुराने निर्णयों से उबरकर आगे बढ़ें। खराब
निर्णयों के लिए खुद को दोषी ठहराकर भी
आप उन निर्णयों के प्रभावों को बदल नहीं
पाएंगे इसलिए उन निर्णयों से सबक लेकर
अच्छे निर्णय करना सीखें।

22 जनवरी अन्तोनियो ग्रांशी का जन्मदिन है



मार्क्स-लेनिन के बाद जिस मार्क्सवादी
ने सबसे ज्यादा सारी दुनिया के मार्क्सवादियों
को प्रभावित किया, वे हैं ग्रांशी! बौद्धिक कर्म
के, लोकतांत्रिक चरित्र पर ग्रांशी खूब जोर
देते थे। उनसे सीखने लिए बहुत कुछ है। ग्रांशी
ने लिखा है:

- "सभी मनुष्य दार्शनिक हैं!"
- "युद्ध के मैदान में शत्रु के कमजोर
ठिकाने पर और विचारधारात्मक संघर्ष में शत्रु
के मजबूत किले पर हमला करना चाहिए."
- "ग्रांशी पर बेनेदितो क्रोचे का भी गहरा
असर था। क्रोचे का मानना था- "मनुष्य को
धर्म की सहायता के बिना जीना चाहिए, और
वह जी सकता है."
- अन्तोनियो ग्रांशी के चिंतन का सार है
- "हर क्रांति के पहले आलोचना, सांस्कृतिक

प्रचार और कठोर परिश्रम से विचारों के प्रसार
से लोगों की स्वार्थी मनोवृत्ति को बदलना
चाहिए, जिसकी वजह से लोग अपनी आर्थिक
और राजनीतिक समस्याओं का हल, व्यक्तिगत
स्तर पर निकालना चाहते हैं."

ग्रांशी की शिक्षा-

- 1- "दुनिया को बदलने की प्रक्रिया में
ही मनुष्य उसे सही ढंग से समझ सकते हैं।
शिक्षा के द्वारा नेतृत्व संभव नहीं है, उसके
लिए संगठन आवश्यक है"
- 2- "व्यापक अर्थ में बुद्धिजीवी वे व्यक्ति
हैं, जो वर्गीय शक्तियों के संघर्ष में मध्यस्थता
के अनिवार्य कार्य को संपन्न करते हैं."
- 3- "राजनीति, दार्शनिक दृष्टि से एक
केन्द्रीय मानवीय गतिविधि है। वह एक ऐसा
साधन है जिसके द्वारा एकाकी चेतना,
सामाजिक और प्राकृतिक जगत के सभी

स्वरूपों से संपर्क स्थापित करती है."

- 4- "किसी भी लेखक के अपने मौलिक
दर्शन और उसकी वैयक्तिक दार्शनिक संस्कृति
के बीच, एक फासला मौजूद रहता है।
वैयक्तिक दार्शनिक संस्कृति का अर्थ होता है-
जो कुछ उसने पढ़ा और आत्मसात
किया, उसे वह जीवन के विभिन्न कालों में
अस्वीकार कर सकता है."
- 5- लोकधर्म का धर्मशास्त्रों से कोई
लेना-देना नहीं है।
- 6- वर्चस्व की धारणा को, हर स्तर पर
चुनौती दो।
- 7- वाद-विवाद-संवाद और शिक्षा को
कॉमनसेंस के तर्कों से दूर रखो।
- 8- हर किस्म के संकीर्णतावाद से
लड़ो।

- जगदीश्वर चतुर्वेदी

शांति मन का प्रभाव

शांति और सदभाव किसी भी देश
के सबसे अधिक आवश्यक तत्वों में से
हैं। देश के नागरिक तभी स्वयं को
सुरक्षित महसूस कर सकते हैं जब देश
का माहौल शांतिपूर्ण होता है। वह राष्ट्र
सुखी, संपन्न तथा समृद्ध भी होता है,
जहाँ पर शांति होती है लेकिन फिर भी
विभिन्न कारणों से अशांति का माहौल
बन ही जाता है। यह स्थिति, राष्ट्र, समाज तथा घर तीनों जगहों पर एक समान
होती है, कारणों को जानना आवश्यक है कि क्योंकि अशांति माहौल बन जाता
है।



ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

आज के प्रौद्योगिकी युग में जितने भी अविष्कार हो रहे हैं चाहे वो मोबाइल,
टेलीविजन, इंटरनेट आदि हैं, ये सभी मनुष्य के मन को अशांति करते हैं, मनुष्य
जितना ज्यादा उन्नति की राह पर बढ़ रहा है उतना अधिक विचलित हो रहा है।
जापान जैसे विकसित देश के नागरिक भी आज के समय में अवसाद के दौर से
गुजर रहे हैं और दुखी हैं इसलिए मनुष्य को खुश रहने के लिए शांति रहना
आवश्यक है। हर परिस्थिति में धैर्य के साथ-साथ शांति भाव का प्रदर्शन करना
अनिवार्य है, क्योंकि अक्सर उत्तेजना हमारी विकट परिस्थिति को अधिक विकट
बना देती है।

हम अपना मन शांति केवल कहने मात्र से ही नहीं कर सकते क्योंकि इसके
भी कुछ नियम हैं। जिस प्रकार योग का अभ्यास करने से पहले हमें योग के यम
नियम को जानना जरूरी है उसी प्रकार हमारा मन शांति हो उसके लिए कुछ
आधारभूत तथ्यों को जानना भी आवश्यक है जैसे कि हमारा भोजन पौष्टिक,
संतुलित एवं सात्विक हो क्योंकि हम जैसा अन्न ग्रहण करते हैं वैसा ही हमारा
मन भी होता है। भोजन के साथ-साथ हमारी वाणी भी संयमित होनी चाहिए।
हमारी वाणी ऐसी होनी चाहिए कि हम औरों के मन को शीतलता प्रदान कर
सकें। हम किसी को अपशब्द न बोलें, वाणी के साथ-साथ हमारे विचार भी
संयमित होने चाहिए। हमारे विचार नकारात्मक नहीं होने चाहिए। नकारात्मक
विचारों वाले लोगों के साथ हमें नहीं रहना चाहिए। हमारी संगति ऐसे लोगों के
साथ होनी चाहिए जहाँ हमें कुछ अच्छा सीखने को मिले जिनसे हमें खुशियाँ
प्राप्त हों न कि हम उन लोगों के साथ रहे जो हमें नकारात्मक विचारों के कारण
दुख दें। हम मनुष्यों को खुश रहने के लिए इन विषयों पर अवश्य ध्यान देना
चाहिए।